بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

حٰمٓ ﴿١﴾

1. हा मीम (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾

2. इस किताब का नाज़िल किया जाना अल्लाह की जानिब से है जो ग़ालिब ह़िक्मतवाला है।

مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ مَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَ اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ﴿٣﴾

3. और हमने आस्मानों को और ज़मीन को और उस (मख़्लूक़ात) को जो उनके दरमियान है पैदा नहीं किया मगर ह़िक्मत और मुक़र्ररा मुद्दत (के तअ़य्युन) केसाथ, और जिन्होंने कुफ़्र किया है उन्हें जिस चीज़ से डराया गया उसी से रू गर्दानी करनेवाले हैं।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ؕ اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤﴾

4. आप फ़रमा दें कि मुझे बताओ तो कि जिन (बुतों) की तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो मुझे दिखाओ कि उन्होंने ज़मीन में क्या चीज़ तख़्लीक़ की है या (येह दिखा दो कि) आस्मानों (की तख़्लीक़) में उनकी कोई शराकत है। तुम मेरे पास इस (क़ुरआन) से पहले की कोई किताब या (अगलों के) इल्म का कोई बक़िय्या ह़िस्सा (जो मन्क़ूल चला आ रहा हो सुबूत के तौर पर) पेश करो। अगर तुम सच्चे हो।

وَ مَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَآئِهِمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٥﴾

5. और उस शख़्स से बढ़ कर गुमराह कौन हो सक्ता है जो अल्लाह के सिवा ऐसे (बुतों) की इबादत करता है जो क़ियामत के दिन तक उसे (सवाल का) जवाब न दे सकें और वोह (बुत) उनकी दुआओ इबादत से (ही) बेख़बर हैं।

وَ اِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَآءً وَّ كَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ۝٦

6. और जब लोग (क़ियामत केदिन) जमा' किऐ जाएंगे तो वोह (मा'बूदाने बातिला) उनके दुश्मन होंगे और (अपनी बराअत की ख़ातिर) उनकी इबादत से ही मुन्किर हो जाएंगे।

وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧

7. और जब उन पर हमारी वाज़ेह़ आयतें पढ़ी जाती हैं (तो) जो लोग कुफ़्र कर रहे हैं ह़क़ (या'नी क़ुरआन) के बारे में, जबकि वोह उनके पास आ चुका, केहते हैं येह खुला जादू है।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَلَا تَمْلِكُوْنَ لِيْ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَا تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ كَفٰى بِهٖ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝٨

8. क्या वोह लोग (येह) केहते हैं कि उस (क़ुरआन) को (पयग़म्बर ने) घड़ लिया है। आप फ़रमा दें : अगर उसे मैंने घड़ा है तो तुम मुझे अल्लाह (के अ़ज़ाब) से (बचाने का) कुछ भी इख़्तियार नहीं रखते, और वोह उन (बातों) को ख़ूब जानता है जो तुम उस (क़ुरआन) के बारे में ता'ना ज़नी के तौर पर कर रहे हो। वोही (अल्लाह) मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह काफ़ी है, और वोह बड़ा बख़्शनेवाला बहुत रह़म फ़रमानेवाला है।

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَ مَاۤ اَدْرِيْ مَا يُفْعَلُ بِيْ وَلَا بِكُمْ ؕ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى اِلَيَّ وَمَاۤ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٩

9. आप फ़रमा दें कि मैं (इन्सानों की तरफ़) कोई पहला रसूल नहीं आया (कि मुझसे क़ब्ल रिसालत की कोई मिसाल ही न हो) और मैं अज़ ख़ुद (या'नी महज़ अपनी अ़क़्लो दिरायत से) नहीं जानता कि मेरे साथ किया सुलूक किया जाएगा और न वोह जो तुम्हारे साथ किया जाएगा, (मेरा इल्म तो येह है कि) मैं सिर्फ़ उस वह़ी की पैरवी करता हूं जो मेरी तरफ़ भेजी जाती है (वोही मुझे हर शय का इल्म अ़ता करती है) और मैं तो सिर्फ़ (उस इल्म बिल वह्य़ की बिना पर) वाज़ेह़ डर सुनानेवाला हूं।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَ كَفَرْتُمْ بِهٖ وَ شَهِدَ شَاهِدٌ

10. आप फ़रमा दीजिए : ज़रा बताओ तो अगर येह (क़ुरआन) अल्लाह की तरफ़ से हो और तुमने उसका इन्कार कर दिया हो और बनी इसराईल में से एक गवाह

مِّنۢ بَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ عَلٰی مِثۡلِهٖ فَاٰمَنَ وَاسۡتَكۡبَرۡتُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یَهۡدِی الۡقَوۡمَ الظّٰلِمِیۡنَ ﴿۱۰﴾ ع ۱

(भी पहली आस्मानी किताबों से) उस जैसी किताब (के उतरने केज़िक्र) पर गवाही दे फिर वोह (उस पर) ईमान (भी) लाया हो और तुम (उसके बावजूद) ग़ुरूर करते रहे (तो तुम्हारा अंजाम क्या होगा ?) बेशक अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं फ़रमाता।

وَقَالَ الَّذِیۡنَ كَفَرُوۡا لِلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا لَوۡ كَانَ خَیۡرًا مَّا سَبَقُوۡنَاۤ اِلَیۡهِ ؕ وَاِذۡ لَمۡ یَهۡتَدُوۡا بِهٖ فَسَیَقُوۡلُوۡنَ هٰذَاۤ اِفۡكٌ قَدِیۡمٌ ﴿۱۱﴾

11. और काफ़िरों ने मोमिनों से कहा : अगर येह (दीने मुहम्मदी ﷺ) बेहतर होता तो येह लोग उसकी तरफ़ हमसे पहले न बढ़ते (हम ख़ुद ही सब से पहले उसे क़ुबूल कर लेते) और जब उन कुफ़्फ़ार) ने (ख़ुद) उससे हिदायत न पाई तो अब केहते हैं कि येह तो पुराना झूट (और बोहतान) है।

وَمِنۡ قَبۡلِهٖ كِتٰبُ مُوۡسٰۤی اِمَامًا وَّرَحۡمَةً ؕ وَهٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِیًّا لِّیُنۡذِرَ الَّذِیۡنَ ظَلَمُوۡا ۖۗ وَبُشۡرٰی لِلۡمُحۡسِنِیۡنَ ﴿۱۲﴾ ۚ

12. और इससे पहले मूसा (علیہ السلام) की किताब (तौरात) पेशवा और रह़मत थी, और येह किताब (उसकी) तस्दीक़ करनेवाली है, अ़रबी ज़बान में है ताकि उन लोगों को डराए जिन्होंने ज़ुल्म किया है और नेकूकारों के लिए ख़ुशख़बरी हो।

اِنَّ الَّذِیۡنَ قَالُوۡا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسۡتَقَامُوۡا فَلَا خَوۡفٌ عَلَیۡهِمۡ وَلَا هُمۡ یَحۡزَنُوۡنَ ﴿۱۳﴾ ۚ

13. बेशक जिन लोगोंने कहा कि हमारा रब अल्लाह है फिर उन्होंने इस्तिक़ामत इख़्तियार की तो उन पर न कोई ख़ौफ़ है और न वोह ग़मगीन होंगे।

اُولٰٓئِكَ اَصۡحٰبُ الۡجَنَّةِ خٰلِدِیۡنَ فِیۡهَا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوۡا یَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۴﴾

14. येही लोग अहले जन्नत हैं जो उसमें हमेशा रेहनेवाले हैं। येह उन आ'माल की जज़ा है जो वोह किया करते थे।

وَوَصَّیۡنَا الۡاِنۡسَانَ بِوَالِدَیۡهِ اِحۡسٰنًا ؕ حَمَلَتۡهُ اُمُّهٗ كُرۡهًا وَّوَضَعَتۡهُ كُرۡهًا ؕ وَحَمۡلُهٗ وَفِصٰلُهٗ ثَلٰثُوۡنَ شَهۡرًا ؕ حَتّٰۤی اِذَا بَلَغَ

15. और हमने इन्सानको अपने वालिदैन के साथ नेक सुलूक करने का हुक्म फ़रमाया। उसकी मां मांने उसे तक्लीफ़ से (पेट में) उठाए रखा और उसे तक्लीफ़ के साथ जना, और उसका (पेट में) उठाना और उसका दूध छुड़ाना (या'नी ज़मानए ह़मलो रज़ाअ़त) तीस माह (पर मुश्तमिल) है। यहां तक कि वोह अपनी जवानी तक

اَشُدَّهٗ وَ بَلَغَ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۙ قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَ عَلٰى وَالِدَيَّ وَ اَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَ اَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ۚ اِنِّيْ تُبْتُ اِلَيْكَ وَ اِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۱۵﴾

पहुंच जाता है और (फिर) चालीस साल (की पुख़्ता उ़म्र) को पहुंचता है तो केहता है : ऐ मेरे रब ! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरे उस एह़सानका शुक्र अदा करूं जो तु ने मुझ पर और मेरे वालिदैन पर फ़रमाया है और येह कि में ऐसे नेक आ'माल करूं जिनसे तु राज़ी हो और मेरे लिए मेरी औलाद में नेकी और ख़ैर रख दे।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَ نَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ فِيْٓ اَصْحٰبِ الْجَنَّةِ ؕ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿۱۶﴾

16. येही वोह लोग हैं हम जिनके नेक आ'माल क़ुबूल करते हैं और उनकी कोताहियों से दरगुज़र फ़रमाते हैं (येही) अहले जन्नत हैं। येह सच्चा वा'दा है जो उनसे किया जा रहा है।

وَ الَّذِيْ قَالَ لِوَالِدَيْهِ اُفٍّ لَّكُمَآ اَتَعِدٰنِنِيْٓ اَنْ اُخْرَجَ وَ قَدْ خَلَتِ الْقُرُوْنُ مِنْ قَبْلِيْ ۚ وَهُمَا يَسْتَغِيْثٰنِ اللّٰهَ وَيْلَكَ اٰمِنْ ۖ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۖ فَيَقُوْلُ مَا هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۷﴾

17. और जिसने अपने वालिदैन से कहा : तुम से बेज़ारी है, तुम मुझे (येह) वा'दा देते हो कि मैं (क़ब्र से दोबारा ज़िन्दा कर के) निकाला जाऊंगा हालांकि मुझ से पहले बहुत सी उम्मतें गुज़र चुकीं। अब वोह दोनों (मां बाप) अल्लाह से फरियाद करने लगे (और लड़के से कहा) तू हलाक हो गया। (ऐ लड़के!) ईमान ले आ, बेशक अल्लाह का वा'दा ह़क़ है। तो वोह (जवाब में) केहता है येह (बातें) अगले लोगों के झूटे अफ़्सानों के सिवा (कुछ) नहीं हैं।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۱۸﴾

18. येही वोह लोग हैं जिन के बारे में फ़रमाने (अ़ज़ाब) साबित हो चुका है बहुत सी उम्मतों में जो उन से पहले गुज़र चुकी हैं जिन्नात की (भी) और इन्सानों की (भी), बेशक वोह (सब) नुक्सान उठाने वाले थे।

وَ لِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۚ وَ

19. और सब केलिए उन (नेको बद) आ'माल की वजह से जो उन्होंने किए (जन्नतो दोज़ख़में अलग अलग)

لِيُوَفِّيَهُمْ اَعْمَالَهُمْ وَ هُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٩﴾

दरजात मुक़र्रर हैं ताकि (अल्लाह) उनको उनके आ'मालका पूरा पूरा बदला दे और उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

وَ يَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِيْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَ بِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُوْنَ ﴿٢٠﴾ ع ٢ ١٠ ٢

20. और जिस दिन काफ़िर लोग आतिशे दोज़ख़के सामने पेश किए जाएंगे (तो उनसे कहा जाएगा), तुम अपनी लज़ीज़ो मरग़ूब चीज़ें अपनी दुन्यवी ज़िन्दगी में ही ह़ासिल कर चुके और उनसे (ख़ूब) नफ़ा' अंदोज़ भी हो चुके। पस आज के दिन तुम्हें ज़िल्लत के अ़ज़ाब की सज़ा दी जाएगी इस वजह से कि तुम ज़मीनमें ना ह़क़ तकब्बुर किया करते थे और इस वजह से (भी) कि तुम ना फ़रमानी किया करते थे।

وَ اذْكُرْ اَخَا عَادٍ ؕ اِذْ اَنْذَرَ قَوْمَهٗ بِالْاَحْقَافِ وَ قَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَ مِنْ خَلْفِهٖۤ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنِّيْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٢١﴾

21. और (ऐ ह़बीब !) आप क़ौमे आ़द के भाई (हूद عليه السلام) का ज़िक्र कीजिए, जब उन्होंने (उ़मान और महरा के दरमियान यमन की एक वादी) अह़क़ाफ़में अपनी क़ौम को (आ'माले बद के नताइज से) डराया हालांकि उससे पहले और उसके बाद (भी कई) डराने वाले (पयग़म्बर) गुज़र चुके थे कि तुम अल्लाहके सिवा किसी और की परस्तिश न करना, मुझे डर है कि कहीं तुम पर बड़े (होलनाक) दिन का अ़ज़ाब (न) आ जाऐ।

قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا لِتَاْفِكَنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٢﴾

22. वोह केहने लगे के क्या आप हमारे इस लिए आए हैं कि हमें हमारे मा'बूदों से बरगश्ता कर दें, पस वोह (अ़ज़ाब) ले आएं जिस से हमें डरा रहे हैं अगर आप सच्चों में से हैं।

قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۖ وَ اُبَلِّغُكُمْ مَّاۤ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَلٰكِنِّيْۤ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ﴿٢٣﴾

23. उन्होंने कहा कि (उस अ़ज़ाब के वक़्त का) इ़ल्म तो अल्लाह ही के पास है और मैं तुम्हें वोही अहकाम पहुंचा रहा हूं जो मैं दे कर भेजा गया हूं लेकिन मैं तुम्हें देख रहा हूं कि तुम जाहिल लोग हो।

فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ
اَوْدِيَتِهِمْ ۙ قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ
مُّمْطِرُنَا ؕ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ
بِهٖ ؕ رِيْحٌ فِيْهَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ ﴿۲۴﴾
تُدَمِّرُ كُلَّ شَیْءٍۭ بِاَمْرِ رَبِّهَا
فَاَصْبَحُوْا لَا يُرٰۤى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ ؕ
كَذٰلِكَ نَجْزِی الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۲۵﴾
وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيْمَاۤ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ
فِيْهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَّ اَبْصَارًا
وَّ اَفْـِٕدَةً ۖؗ فَمَاۤ اَغْنٰى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ
وَلَاۤ اَبْصَارُهُمْ وَلَاۤ اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ
شَیْءٍ اِذْ كَانُوْا يَجْحَدُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِ
اللّٰهِ وَ حَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ
يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۲۶﴾ ع
وَ لَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ
الْقُرٰى وَ صَرَّفْنَا الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُوْنَ ﴿۲۷﴾
فَلَوْ لَا نَصَرَهُمُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ؕ بَلْ
ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ وَ ذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَ مَا
كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۲۸﴾

24. फिर जब उन्होंने उस (अ़ज़ाब) को बादलकी तरह़ अपनी वादियों केसामने आता हुवा देखा तो केहने लगे : येह (तो) बादल है जो हम पर बरसनेवाला है (ऐसा नहीं) वोह (बादल) तो वोह (अ़ज़ाब) है जिसकी तुमने जलदी मचा रखी थी। (येह) आँधी है जिसमें दर्दनाक अ़ज़ाब (आ रहा) है।

25. (जो) अपने परवरदिगार के हुक्म से हर शय को तबाहो बरबाद कर देगी पस वोह ऐसे (तबाह) हो गए कि उनके (मिस्मार) घरों के सिवा कुछ नज़र नहीं आता था। हम मुजरिम लोगों को इस तरह सज़ा दिया करते हैं।

26. (ऐ अहले मक्का !) दर ह़क़ीक़त हमने उनको उन उमूर में ताक़तो क़ुदरत दे रखी थी जिन में हमने तुमको क़ुदरत नहीं दी और हमने उन्हें समाअ़त और बसारत और दिलो दिमाग़ (की बे बहा सलाहि़यतों) से नवाज़ा था मगर न तो उनके कान ही उनके कुछ काम आ सके और न उनकी आँखें और न (ही) उनकेदिलो दिमाग़ जबकि वोह अल्लाह की निशानियों का इन्कार ही करते रहे और (बिल आखि़र) उस (अ़ज़ाब)ने उन्हें आ घेरा जिसका वोह मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

27. और (ऐ अहले मक्का!) बेशक हमने कितनी ही बस्तियों को हलाक कर डाला जो तुम्हारे इर्द गिर्द थीं और हमने अपनी निशानियां बार बार ज़ाहिर कीं ताकि वोह (कुफ्ऱसे) रुजूअ़ कर लें।

28. फिर उन (बुतों) ने उनकी मदद क्यों न की जिन को उन्होंने तक़र्रुबे (इलाही) के लिए अल्लाहके सिवा मा'बूद बना रखा था, बल्कि वोह (मा'बूदाने बातिला) उनसे गुम हो गए, और येह (बुतों को मा'बूद बनाना) उनका झूट था और येही वोह बोहतान (था) जो वोह बांधा करते थे।

وَ اِذْ صَرَفْنَآ اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ قَالُوْٓا اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا اِلٰى قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿٢٩﴾

29. और (ऐ ह़बीब !) जब हमने जिन्नात की एक जमाअ़तको आपकी तरफ़ मुतवज्जे किया जो कुरआन ग़ौर से सुनते थे । फिर जब वोह वहां (या'नी बारगाहे नुबुव्वत में) ह़ाज़िर हुए तो उन्होंने (आपस में) कहा : ख़ामोश रहो, फिर जब (पढ़ना) ख़त्म हो गया तो वोह अपनी क़ौमकी तरफ़ डर सुनानेवाले (या'नी दाई इलल ह़क़्क़) बन कर वापस गए।

قَالُوْا يٰقَوْمَنَآ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ وَ اِلٰى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣٠﴾

30. उन्होंने कहा : ऐ हमारी क़ौम ! (या'नी ऐ कौमे जिन्नात!) बेशक हमने एक (ऐसी) किताब सुनी है जो मूसा (علیہ السلام की तौरात) के बाद उतारी गई है (जो) अपने से पेहले (की किताबों) की तस्दीक़ करने वाली है (वोह) सच्चे (दीन) और सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत करती है।

يٰقَوْمَنَآ اَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ وَ اٰمِنُوْا بِهٖ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَ يُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣١﴾

31. ऐ हमारी क़ौम ! तुम अल्लाह की तरफ़ बुलानेवाले (या'नी मुह़म्मद रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) की बात क़ुबुल कर लो और उन पर ईमान ले आओ (तो) अल्लाह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से पनाह देगा।

وَ مَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْاَرْضِ وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءُ ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٢﴾

32. और जो शख़्स अल्लाह की तरफ़ बुलानेवाले (रसूल صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) की बात क़ुबूल नहीं करेगा तो वोह ज़मीन में (भाग कर अल्लाहको) आ़जिज़ नहीं कर सकेगा और न ही उसकेलिए अल्लाह केसिवा कोई मददगार होंगे । येही लोग खुली गुमराही में हैं।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ؕ بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٣﴾

33. क्या वोह नहीं जानते कि अल्लाह जिसने आस्मानों और ज़मीन को पैदा फ़रमाया और वोह उनके पैदा करने से थका नहीं इस बात पर (भी) क़ादिर है कि वोह मुर्दों को (दोबारा) ज़िन्दा फ़रमा दे। क्यों नहीं, बेशक वोह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।

وَ يَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَ رَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۳۴﴾

34. और जिस दिन वोह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया आतिशे दोज़ख़के सामने पेश किए जाएंगे (तो उनसे कहा जाएगा) क्या येह (अ़ज़ाब) बर हक़ नहीं है? वोह कहेंगे : क्यों नहीं हमारे रबकी क़सम (बर हक़ है), इर्शाद होगा : फिर अ़ज़ाब का मज़ा चखो जिसका तुम इन्कार किया करते थे।

فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَ لَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ؕ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ؕ بَلٰغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۳۵﴾ ع ۴ ۹ ۴

35. (ऐ ह़बीब !) पस आप सब्र किए जाएं जिस तरह़ (दूसरे) आ़ली हिम्मत पयग़म्बरों ने सब्र किया था और आप उन (मुन्किरों) के लिए (तलबे अ़ज़ाब में) जलदी न फ़रमाएं, जिस दिन वोह उस (अ़ज़ाबे आख़िरत) को देखेंगे जिसका उनसे वा'दा किया जा रहा है तो (ख़याल करेंगे) गोया वोह (दुनिया में) दिन की एक घड़ी के सिवा ठेहरे ही नहीं थे, (येह अल्लाह की तरफ़ से) पैग़ाम का पहुंचाया जाना है, ना फ़रमान क़ौम केसिवा दीगर लोग हलाक नहीं किए जाऐंगे।

रुकूआ़तुहा 4 | 47 सूरतु मुह़म्मद म.दनिय्यतुन 95 | आयातुहा 38

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ صَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿۱﴾

1. जिन लोगों ने कुफ़्र किया और (दूसरों को) अल्लाह की राह से रोका (तो) अल्लाहने उनकेआ'माल (उख़रवी अज्र के लिहाज़ से) बरबाद कर दिए।

وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ اٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَ اَصْلَحَ بَالَهُمْ ﴿۲﴾

2. और जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे और उस (किताब) पर ईमान लाए जो मुह़म्मद (ﷺ) पर नाज़िल की गई है और वोही उनके रब की जानिब से ह़क़ है अल्लाहने उनके गुनाह उन (के नामए आ'माल) से मिटा दिए और उनका ह़ाल सँवार दिया।

ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا
الْبَاطِلَ وَ اَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا
الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ
اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ﴿۳﴾

3. येह इस लिए कि जिन लोगोंने कुफ़्र किया वोह बातिल केपीछे चले और जो लोग ईमान लाऐ उन्होंने अपने रबकी तरफ़ से (उतारे गए) ह़क़ की पैरवी की, इसी तरह अल्लाह लोगों केलए उनके अेहवाल बयान फ़रमाता है।

فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ
الرِّقَابِ ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ
فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ۙ فَاِمَّا مَنًّاۢ بَعْدُ وَ
اِمَّا فِدَآءً حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ
اَوْزَارَهَا ۛ ۚ ذٰلِكَ ؕ وَ لَوْ يَشَآءُ اللّٰهُ
لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ وَ لٰكِنْ لِّيَبْلُوَاۡ
بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ؕ وَ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ
اَعْمَالَهُمْ ﴿۴﴾

4. फिर जब (मैदाने जंग में) तुम्हारा मुक़ाबला (मुतह़ारिब) काफ़िरों से हो तो (दौराने जंग) उनकी गरदनें उड़ा दो, यहां तककि जब तुम उन्हें (जंगी मा'रकेमें) खूब कर चुको तो (बक़िय्या क़ैदियोंको) मज़बूती से बांधलो, फिर उसके बाद या तो (उन्हें) (बिला मुआ़वज़ा) एहसान कर के(छोड़ दो) या फ़िदया (या'नी मुआ़विज़ए रिहाई) ले कर (आजाद कर दो) यहां तक कि जंग (करने वाली मुख़ालिफ़ फ़ौज) अपने हथियार रख दे (या'नी सुल्हो अम्नका ए'लान कर दे) । येही (हुक्म) है, और अगर अल्लाह चाहता तो उनसे (बिग़ैर जंग) इन्तिक़ाम ले लेता मगर (उसने ऐसा नहीं किया) ताकि तुममें से बा'ज़ के ज़रीए़ आजमाए, और जो लोग अल्लाह की राहमें क़त्ल कर दिए गए तो वोह उनके आ'माल को हरगिज़ ज़ाऐ न करेगा।

مع ٣ وقد يبتدا بقوله ذٰلِكَ ؕ ولكن حسن اتصاله بما قبله ويوقف على ذٰلِكَ ؕ

سَيَهْدِيْهِمْ وَ يُصْلِحُ بَالَهُمْ ﴿۵﴾ ۚ

5. वोह अ़नक़रीब उन्हें (जन्नत की) सीधी राह पर डाल देगा और उनकेअहवाले (उख़्रवी) को खूब बेहतर कर देगा।

وَ يُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ﴿۶﴾

6.और बिल आख़िर उन्हें जन्नतमें दाख़िल फ़रमा देगा जिसकी उसने (पहले ही से) उन्हें खूब पहेचान करा दी है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَنْصُرُوا
اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَ يُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ﴿۷﴾

7. ऐ ईमानवालो ! अगर तुम अल्लाह (के दीन) की मदद करोगे तो वोह तुम्हारी मदद फ़रमाएगा और तुम्हारे क़दमों को मज़बूत रखेगा।

وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَ

8. और जिन्होंने कुफ़्र किया तो उन के लिए हलाकत है

اَضَلَّ اَعۡمَالَهُمۡ ﴿۸﴾

और (अल्लाहने) उनके आ'माल बरबाद कर दिए।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ كَرِهُوۡا مَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ فَاَحۡبَطَ اَعۡمَالَهُمۡ ﴿۹﴾

9. येह उस वजह से कि उन्होंने इस (किताब) को नापसंद किया जो अल्लाहने नाज़िल फ़रमाई तो उसने उनके आ'माल अकारत कर दिऐ।

اَفَلَمۡ يَسِيۡرُوۡا فِى الۡاَرۡضِ فَيَنۡظُرُوۡا كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ ؕ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيۡهِمۡ ۫ وَ لِلۡكٰفِرِيۡنَ اَمۡثَالُهَا ﴿۱۰﴾

10. क्या उन्होंने ज़मीन में सफ़रो सियाह़त नहीं की कि वोह देख लेते के उन लोगोंका अंजाम कैसा हुआ जो उनसे पहले थे। अल्लाहने उन पर हलाकतो बरबादी डाल दी। और काफ़िरों के लिए उसी तरह की बहोत सी हलाकतें हैं।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوۡلَى الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَ اَنَّ الۡكٰفِرِيۡنَ لَا مَوۡلٰى لَهُمۡ ﴿۱۱﴾ ع ۱۱ ۵

11. येह इस वजह से है कि अल्लाह उन लोगों का वली-व-मददगार है जो ईमान लाए हैं और बेशक काफ़िरों के लिए कोई वली-व-मददगार नहीं है।

اِنَّ اللّٰهَ يُدۡخِلُ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ ؕ وَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا يَتَمَتَّعُوۡنَ وَ يَاۡكُلُوۡنَ كَمَا تَاۡكُلُ الۡاَنۡعَامُ وَالنَّارُ مَثۡوًى لَّهُمۡ ﴿۱۲﴾

12. बेशक अल्लाह उन लोगोंको जो ईमान लाए और नेक आ'माल करते रहे बहिश्तों में दाख़िल फ़रमाएगा जिनके नीचे नेहरें जारी होंगी, और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और (दुन्यवी) फ़ाइदे उठा रहे हैं और (उस तरह) खा रहे हैं जैसे चौपाए (जानवर) खाते हैं सो दोज़ख़ ही उनका ठिकाना है।

وَ كَاَيِّنۡ مِّنۡ قَرۡيَةٍ هِىَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنۡ قَرۡيَتِكَ الَّتِىۡۤ اَخۡرَجَتۡكَ ۚ اَهۡلَكۡنٰهُمۡ فَلَا نَاصِرَ لَهُمۡ ﴿۱۳﴾

13. और (ऐ ह़बीब !) कितनी ही बस्तियां थीं जिनके बाशिन्दे (वसाइलो इक्तिदार में) आपके उस शहर (मक्का के बाशिन्दों) से ज़ियादा ताकतवर थे जिस (के मुक़्तदिर वडेरों) ने आपको (बसूरते हिजरत) निकाल दिया है, हमने उन्हें (भी) हलाक कर डाला फिर उनका कोई मददगार न हुआ (जो उन्हें बचा सक्ता)।

اَفَمَنۡ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنۡ رَّبِّهٖ كَمَنۡ زُيِّنَ لَهٗ سُوۡٓءُ عَمَلِهٖ

14. सो क्या वोह शख़्स जो अपने रबकी तरफ़ से वाज़ेह़ दलील पर (क़ाइम) हो उन लोगों की मिस्ल हो सक्ता है जिनके बुरे आ'माल उन के लिए आरास्ता करके दिखाए

وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ﴿١٤﴾

गए हैं और वोह अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात केपीछे चल रहे हों।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ فِيْهَآ اَنْهٰرٌ مِّنْ مَّآءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ؕ وَلَهُمْ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ؕ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ ﴿١٥﴾

15. जिस जन्नतका परहेज़गारोंसे वा'दा किया गया है उसकी सिफ़त येह है कि उसमें (ऐसे) पानी की नेहरें होंगी जिसमें कभी (बू या रंगतका) तग़य्युर न आएगा, और (उसमें ऐसे) दूधकी नेहरें होंगी जिसका ज़ाइक़ा और मज़ा कभी न बदलेगा, और (ऐसी) शराबे (तहूर) की नेहरें होंगी जो पीनेवालों के लिए सरासर लज़्ज़त है, और खूब साफ़ किए हुए शहदकी नेहरें होंगी, और उन केलिए उसमें हर किस्म केफल होंगे और उनकेरबकी जानिब से (हर तरह की) बख़्शाइश होंगी, (क्या येह परहेज़गार) उन लोगों की तरह हो सक्ता है जो हमेंशा दोज़ख़में रेहनेवाले हैं और जिन्हें खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा तो वोह उनकी आँतों को काट कर टुकड़े टुकड़े कर देगा।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ حَتّٰٓى اِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ﴿١٦﴾

16. और उनमें से बा'ज वोह लोग भी हैं जो आपकी तरफ़ (दिल और ध्यान लगाए बिग़ैर) सिर्फ़कान लगाए सुनते रेहते हैं यहां तक कि जब वोह आपके पास से निकल कर (बाहर) जाते हैं तो उन लोगों से पूछते हैं जिन्हें इल्मे (नाफ़े') अ़ता किया गया है कि अभी उन्होंने (या'नी रसूलुल्लाह ﷺ ने) क्या फ़रमाया था? येही वोह लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाहने मोहर लगा दी है और वोह अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी कर रहे हैं।

وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَّاٰتٰىهُمْ تَقْوٰىهُمْ ﴿١٧﴾

17. और जिन लोगोंने हिदायत पा ली है, अल्लाह उनकी हिदायत को और ज़ियादा फ़रमा देता है और उन्हें उनके मुक़ामे तक़्वा से सरफ़राज फ़रमाता है।

فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ

18. तो अब येह (मुन्किर) लोग सिर्फ़क़ियामत ही का

تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۚ فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَآءَتْهُمْ ذِكْرٰىهُمْ ﴿١٨﴾

इन्तिज़ार कर रहे हैं कि वोह उन पर अचानक आ पहुंचे? सो वाक़ई उसकी निशानियां (क़रीब) आ पहुंची हैं, फिर उन्हें उनकी नसीहत कहां (मुफ़ीद) होगी जब (खुद) क़ियामत (ही) आ पहुंचेगी।

فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ﴿١٩﴾ ع ٢ ٨ ٦

19. पस जान लीजिए कि अल्लाह केसिवा कोई मा'बूद नहीं और आप (इज़्हारे उबूदिय्यत और तालीमे उम्मतकी ख़ातिर अल्लाह से) मुआ़फ़ी मांगते रहा करें कि कहीं आपसे ख़िलाफ़े ऊला (या'नी आपके मर्तबए आ़लिया से कम दरजेका) फे'ल सादिर न हो जाए।★ और मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों के लिए भी तलबे मगफ़िरत (या'नी उनकी शफ़ाअ़त) फ़रमाते रहा करें (येही उनका सामाने बख़्शिश है), और (ऐ लोगो !) अल्लाह (दुनिया में) तुम्हारे चलने फिरने के ठिकाने और (आखिरत में) तुम्हारे ठेहरने की मन्ज़िलें (सब) जानता है।

وَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَّ ذُكِرَ فِيْهَا الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ؕ فَاَوْلٰى لَهُمْ ﴿٢٠﴾

20. और ईमानवाले केहते हैं कि (हुक्मे जिहाद के मुतअ़ल्लिक़) कोई सूरत क्यों नहीं उतारी जाती? फिर जब कोई वाज़ेह़ सूरत नाज़िल की जाती है और उसमें (सरीह़न) जिहादका ज़िक्र किया जाता है तो आप ऐसे लोगोंको जिनके दिलों में (निफ़ाक़ की) बीमारी है मुलाहिज़ा फ़रमाते हैं कि वोह आपकी तरफ़ (इस तरह़) देखते हैं जैसे वोह शख़्स देखता है जिस पर मौत की ग़शी तारी हो रही हो। सो उन के लिए ख़राबी है।

طَاعَةٌ وَّ قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ ۫ فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ ۫ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ﴿٢١﴾

21. फ़रमां बरदारी और अच्छी गुफ़्तगू (उनके ह़क़ में बेहतर) है, फिर जब हुक्मे जिहाद क़त्ई (और पुख़्ता) हो गया तो अगर वोह अल्लाह से (अपनी इताअ़त और वफ़ादारी में) सच्चे रेहते तो उन के लिए बेहतर होता।

★(ख़्वाह वोह फे'ल अपनी जगह शरअ़न जाइज़ और मुस्तह़सन ही क्यों न हो मगर आप ﷺ का मुक़ामो मर्तबा इतना बुलंद और अफ़ा-.व-आ'ला है कि कई आ'माले सालेहा भी आप ﷺ की शान केलिहाज़ से कमतर हैं)

فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَ تُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ ﴿٢٢﴾

22. पस (ऐ मुनाफ़िक़ो !) तुम से तवक़्क़ो' येही है कि अगर तुम (क़ितालसे गुरेज़ करके बच निकलो और) हुकूमत हासिल कर लो तो तुम ज़मीनमें फ़साद ही बरपा करोगे और अपने (उन) कुराबती रिश्तों को तोड डालोगे (जिनके बारे में अल्लाह और उसके रसूल ﷺ ने मुवासिलत और मुवद्दत का हुक्म दिया है)।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَ اَعْمٰٓى اَبْصَارَهُمْ ﴿٢٣﴾

23. येही वोह लोग हैं जिन पर अल्लाहने ला'नत की है और उन (के कानों) बेहरा कर दिया है और उनकी आँखों को अँधा कर दिया है।

اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ اَمْ عَلٰى قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾

24. क्या येह लोग कुर्आन में ग़ौर नहीं करते या उनके दिलों पर ताले (लगे हुऐ) हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ ارْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ ؕ وَ اَمْلٰى لَهُمْ ﴿٢٥﴾

25. बेशक जो लोग पीठ फेर कर पीछे (कुफ़्र की तरफ) लौट गऐ उसके बाद के उनपर हिदायत वाजेह हो चुकी थी शैतान ने उन्हें (कुफ़्र की तरफ वापस पलटना धोकादही से) अच्छा करके दिखाया, और उन्हें (दुन्या में) तवील जिन्दगी की उम्मीद दिलाई।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ سَنُطِيْعُكُمْ فِيْ بَعْضِ الْاَمْرِ ۚ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ اِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾

26. येह इस लिए कि उन्होंने उन लोगों से कहा जो अल्लाह की नाज़िल कर्दह किताबको नापसंद करते थे के हम बाज उमूर में तुम्हारी पैरवी करेंगे और अल्लाह उनके खुफ़्या मश्वरा करने को खूब जानता है।

فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَ اَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾

27. फिर (उस वक़्त का हश्र) कैसा होगा जब फ़रिश्ते उनकी जान (इस हाल में) निकालेंगे कि उनके चेहरों और उनकी पीठों पर ज़र्बें लगाते होंगे?

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا مَآ اَسْخَطَ اللّٰهَ وَ كَرِهُوْا رِضْوَانَهٗ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾ ع ٣ ٩ ٧

28. येह इस वजह से है कि उन्होंने उस (रविश) की पैरवी की जो अल्लाह को नाराज़ करती है और उन्होंने उसकी रजा नापसंद किया तो उसने उनके (जुमले) आ'माल अकारत कर दिए ।

اَمۡ حَسِبَ الَّذِيۡنَ فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ مَّرَضٌ اَنۡ لَّنۡ يُّخۡرِجَ اللّٰهُ اَضۡغَانَهُمۡ ﴿۲۹﴾

29. क्या वोह लोग जिनके दिलों में (निफाक की) बीमारी है येह गुमान करते हैं के अल्लाह उनके कीनों और अ़दावतों को हरगिज़ जाहिर न फ़रमाऐगा।

وَلَوۡ نَشَآءُ لَاَرَيۡنٰكَهُمۡ فَلَعَرَفۡتَهُمۡ بِسِيۡمٰهُمۡ ؕ وَ لَتَعۡرِفَنَّهُمۡ فِىۡ لَحۡنِ الۡقَوۡلِ ؕ وَاللّٰهُ يَعۡلَمُ اَعۡمَالَكُمۡ ﴿۳۰﴾

30. और अगर हम चाहें तो आपको बिलाशुबा वोह (मुनाफ़िक़) लोग (इस तरह) दिखा दें कि आप उन्हें उनके चेहरों की अ़लामत से ही पेहचान लें, और (इसी तरह) यक़ीनन आप उनके अंदाज़े कलाम से भी उन्हें पहेचान लेंगे, और अल्लाह तुम्हारे सब आ'माल को (खूब) जानता है।

وَلَنَبۡلُوَنَّكُمۡ حَتّٰى نَعۡلَمَ الۡمُجٰهِدِيۡنَ مِنۡكُمۡ وَ الصّٰبِرِيۡنَ ۙ وَ نَبۡلُوَاۡ اَخۡبَارَكُمۡ ﴿۳۱﴾

31. और हम जरूर तुम्हारी आजमाईश करेंगे यहां तक के तुम में से (साबित कदमी के साथ) जिहाद करने वालों और सब्र करनेवालों को (भी) ज़ाहिर कर दें और तुम्हारी (मुनाफ़िक़ाना बुज़दिली की मुख़्फ़ी) खबरें (भी) जाहिर कर दें।

اِنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَ صَدُّوۡا عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ وَشَآقُّوا الرَّسُوۡلَ مِنۡۢ بَعۡدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الۡهُدٰى ۙ لَنۡ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيۡـًٔا ؕ وَسَيُحۡبِطُ اَعۡمَالَهُمۡ ﴿۳۲﴾

32. बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और (लोगोंको) अल्लाह की राहसे रोका और रसूल (ﷺ) की मुखालिफ़त (और उनसे जुदाई की राह इख़्तियार) की इसके बाद कि उन पर हिदायत (या'नी अ़ज़मते रसूल ﷺ की मारेफत) वाज़ेह़ हो चुकी थी वोह अल्लाह का हरगिज कुछ नुक्सान नहीं कर सकेंगे (या'नी रसूल ﷺ की क़द्रो मन्ज़िलत को घटा नहीं सकेंगे), ★ और अल्लाह उनके (सारे) आ'माल को (मुख़ालिफ़ते रसूल ﷺ के बाइस) नीस्तो नाबूद कर देगा।

★ (तमाम अइमए तफ़्सीर ने लिखा है (लंय यदुर्रुल्ला-ह शयअन) अय लंय यदुर्रु रसूलुल्लाह ﷺ बमशाक़तिही व ह़ज़्फ़ुल मुज़ाफ़ लिता'ज़ीमि शानिही। मुलाह़िज़ा फ़रमाए : अत्तबरी, अल बैज़ावी, रूहुल मआ़नी, रूहुल बयान, अल जुमल, अल बह़रुल मदीद वगैरा। इस अस्लूबे कलाम की मिसालें कुर्आन मजीद में बहुत हैं जिन में से एक सूरतुल ब-क-रह की आयत : 9 (युख़ादिऊ़नल्ला-ह वल्लजी-न आ-मनू) है। इस मुक़ाम पर युख़ादिऊ़नल्ला-ह "वोह अल्लाह को धोका देना चाहते हैं" केह कर मुराद युख़ादिऊ़-न रसूलुल्लल्ला-ह "वोह अल्लाह के रसूल ﷺ को धोका देना चाहते हैं" लिया गया है।)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَ لَا تُبْطِلُوْۤا اَعْمَالَكُمْ ﴿۳۳﴾

33. ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह की इताअ़त किया करो और रसूल (ﷺ) की इताअ़त किया करो और अपने आ'माल बरबाद मत करो।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ صَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ﴿۳۴﴾

34. बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और (लोगों को) अल्लाहकी राह से रोका फिर इस हाल में मर गऐ तो वोह काफ़िर थे तो अल्लाह उन्हें कभी न बख़्शेगा।

فَلَا تَهِنُوْا وَ تَدْعُوْۤا اِلَى السَّلْمِ ۖۚ وَ اَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ ۖۚ وَ اللّٰهُ مَعَكُمْ وَ لَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ﴿۳۵﴾

35. (ऐ मोमिनो!) पस तुम हिम्मत न हारो और इन (म-तहारिब काफ़िरों) से सुलहकी दरख़ास्त न करो (कहीं तुम्हारी कमज़ोरी ज़ाहिर न हो), और तुम ही ग़ालिब रहोगे, और अल्लाह तुम्हारे साथ है और वोह तुम्हारे आ'माल (का सवाब) हरगिज़ कम न करेगा।

اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّ لَهْوٌ ؕ وَ اِنْ تُؤْمِنُوْا وَ تَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ اُجُوْرَكُمْ وَ لَا يَسْـَٔلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ ﴿۳۶﴾

36. बस दुन्या की ज़िन्दगी तो महज़ खेल और तमाशा है, और अगर तुम ईमान ले आओ और तक़्वा इख़्तियार करो तो वोह तुम्हें तुम्हारे (आ'माल पर कामिल) सवाब अता फ़रमाएगा और तुमसे तुम्हारे माल तलब नहीं करेगा।

اِنْ يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَ يُخْرِجْ اَضْغَانَكُمْ ﴿۳۷﴾

37. अगर वोह तुमसे उस मालको तलब कर ले फिर तुम्हें तलब में तंगी दे तो तुम्हें (दिल में) तंगी मेहसूस होगी (और) तुम बुख़्ल करोगे और (इस तरह) वोह तुम्हारे (दुनिया परस्ती के बाइस बातिनी) जंग ज़ाहिर कर देगा।

هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَ مَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ الْغَنِيُّ وَ اَنْتُمُ

38. याद रखो तुम वोह लोग हो जिन्हें अल्लाह की राह में ख़र्च करने के लिए बुलाया जाता है तो तुम में से बा'ज़ ऐसे भी हैं जो बुख़्ल करते हैं, और जो कोई भी बुख़्ल करता है वोह महज़ अपनी जान ही से बुख़्ल करता है, और अल्लाह बेनियाज़ है और तुम (सब) मोहताज हो, और

الْفُقَرَآءُ ۚ وَ اِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْٓا اَمْثَالَكُمْ ﴿۳۸﴾

अगर तुम (हुक्मे इलाही से) रूगरदानी करोगे तो वोह तुम्हारी जगह बदल कर दूसरी क़ौम को ले आएगा फिर वोह तुम्हारे जैसे न होंगे।

ع ۴ ۱۰ ۱۸

रुकूआ़तुहा 4 | 48 सूरतुल फत्ह़ म.दनिय्यतुन 111 | आयातुहा 29

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है

اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ۙ﴿۱﴾

1. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) बेशक हमने आपके लिए (इस्लामकी) रौशन फ़तह (और गलबे) का फैसला फ़रमा दिया। (इस लिए के आपकी अजीम जद्दो जहद काम्याबी के साथ मुकम्मल हो जाऐ)।

لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ وَ مَا تَاَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ

2. ताके आपकी खातिर अल्लाह आपकी उम्मत (के उन तमाम अफराद) की अगली पिछली खताऐं मुआफ़ फ़रमा दे ★

★(यहां ह़ज़फ़े मुज़ाफ़ वाक़े' हुवा है। मुराद ''मा तकद्द-म मिन ज़ंबि उम्मतिक वमा तअख़्ख़-र'' है। क्यों कि आगे उम्मत ही केलिए नुजूले सकीना, दुखूले जन्नत और बख़्शिशे सय्यिआत की बिशारत का ज़िक्र किया गया है, येह मज़मून, आयत : 1 ता 5 तक मिला कर पढ़ें तो मा'ना खुद बखुद वाज़ेह़ हो जाएगा और मज़ीद तफ़्सील तफसीर में मुलाहिज़ा फ़रमाएं। जैसा कि सूरतुल मुअमिन की आयत नंबर 55 के तहत मुफ़स्सिरीने किराम ने बयान किया है कि ''लि-ज़ंबि-क'' में ''उम्मत'' मुज़ाफ़ है जो के मह़ज़ूफ़ है, लिहाज़ा इस बिना पर यहां वस्तग़फ़िर लि-ज़ंबि-क से मुराद उम्मत के गुनाह हैं। इमाम नस्फ़ी, इमाम कुर्तुबी और अ़ल्लामा शौकानीने येही मा'ना बयान किया है। ह़वाला जात मुलाहिज़ा करें।

1. (वस्तगफ़िर लि-ज़ंबि-क) अय्यु लि-ज़ंबि उम्मतिक ''या'नी अपनी उम्मतके गुनाह''। (नस्फ़ी, मदारिकुत तन्ज़ील व ह़काइकुत ता'वील, 4 : 359)

2. (वस्तगफ़िर लि-ज़ंबि-क) क़ी.ल : लि.ज़ंबि उम्मति-क ह़ज़फ़ुल मुज़ाफ़ु व अक़ीमुल मुज़ाफ़ु इलैहि मक़ामुहू ''वस्तगफ़िर लि-ज़ंबि-क'' के बारेमें कहा गया है कि इससे मुराद उम्मत के गुनाह हैं। यहां मुज़ाफ़ को ह़ज़फ़ कर के मुज़ाफ़ इलैहको उसका क़ाइम मुक़ाम कर दिया गया।''

(कुर्तुबी, अल जामिउ़ल अह़कामुल कुरआन, 324 : 15)

عَلَيْكَ وَ يَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۙ﴿۲﴾

(जिन्होंने आपके हुक्म पर जिहाद किए और क़ुर्बानियां दीं) और (यूं इस्लाम की फतेह और उम्मत की बख़्शिश की सूरत में) आप पर अपनी ने'मत (ज़ाहिरन-व-बातिनन) पूरी फ़रमा दे और आप (के वास्ते से आपकी उम्मत) को सीधे रास्ते पर साबित क़दम रखे ।

وَّ يَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيْزًا ﴿۳﴾

3. और अल्लाह आपको निहायत बाइ़ज़्ज़त मददो नुसरत से नवाज़े।

هُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْۤا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ؕ وَ لِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۙ﴿۴﴾

4. वोही है जिसने मोमिनों के दिलों में तस्कीन नाज़िल फ़रमाई। ताकि उनके ईमान पर मज़ीद ईमान का इजाफा हो (यानी इल्मुलयकीन, ऐनुलयकीन में बदल जाऐ), और आसमानों और ज़मीन के सारे लश्कर अल्लाह ही के लिए हैं, और अल्लाह खूब जाननेवाला, बडी हिक्मतवाला है।

لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَ يُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ ؕ وَ كَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا عَظِيْمًا ۙ﴿۵﴾

5. (येह सब ने'मतें इस लिए जमा की हैं) ताकि वोह मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को बहिश्तों में दाख़िल फ़रमाए जिन के नीचे नेहरें रवां हैं (वोह) उनमें हमेंशा रेहने वाले हैं। और (मज़ीद येहकि) वोह उनकी लग़ज़िशों को (भी) उनसे दूर कर दे (जैसे उसने उनकी ख़ताएं मुआ़फ़ की हैं) । और येह अल्लाह के नजदीक (मोमिनों की) बहुत बड़ी काम्याबी है।

وَّ يُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتِ

6. और (इस लिए भी के उन) मुनाफिक मर्दों और

---

3. "वक़ी-ल लि-ज़ंबि उम्मति-क फ़ी ह़क़्कि-क " येह भी कहा गया है के लि-ज़ंबि-क या'नी आप अपने ह़क़में उम्मत से सरज़द होनेवाली ख़ताओं की।" (इब्ने ह़य्यान उन्दुलुसी, अल बहरुल मुहीत, 7 : 471)

4.(वस्तगफ़िर लि-ज़ंबि-क) कीलल मुरादु ज़ंबि उम्मति-क फह-व अ़ला ह़ज़फ़ुल मुज़ाफ़ " कहा गया है कि इससे मुराद उम्मतके गुनाह हैं और येह मा'ना मुज़ाफ़ के महजूफ़ होने की बिना पर है।" (अल्लामा शौकानी, फ़त्हुल क़दीर, 4 : 497)

وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ الظَّآنِّيْنَ
بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ
السَّوْءِ ۚ وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَ
لَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ
مَصِيْرًا ﴿٦﴾

मुनाफ़िक़ औरतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को अजाब दे जो अल्लाह के साथ बुरी बदगुमानियां रखते हैं, उन ही पर बुरी गर्दिश (मुक़र्रर) है, और उन पर अल्लाह ने ग़ज़ब फ़रमाया और उन पर लानत फ़रमाई और उनके लिए दोज़ख़ तैयार की, और वोह बहोत बुरा ठिकाना है।

وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿٧﴾

7.और आस्मानों और जमीन के सब लश्कर अल्लाह ही के लिए हैं, और अल्लाह बड़ा ग़ालिब बड़ी हिक्मत वाला है।

اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّ
نَذِيْرًا ۙ﴿٨﴾

8. बेशक हमने आपको (रोजे कियामत ग़वाही देने के लिए आ'मालो अहवाले उम्मतका) मुशाहिदा फ़रमाने वाला और खूशख़बरी सुनानेवाला और डर सुनानेवाला बना कर भेजा है।

لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ
وَ تُوَقِّرُوْهُ ؕ وَ تُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً
وَّاَصِيْلًا ﴿٩﴾

9. ताकि (ऐ लोगो !) तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उन (के दीन) की मदद करो और उनकी बेहद ता'ज़ीमो तकरीम करो, और (साथ) अल्लाह की सुब्हो शाम तस्बीह करो।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ
اللّٰهَ ؕ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ فَمَنْ
نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَ
مَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ
فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٠﴾ ع

10. (ऐ हबीब !) बेशक जो लोग आपसे बैअ़त करते हैं वोह अल्लाह ही से बैअ़त करते हैं, उनके हाथों पर (आपके हाथकी सूरत में) अल्लाहका हाथ है। फिर जिस शख़्सने बैअ़त को तोड़ा तो उसके तोड़ने का वबाल उसकी अपनी जान पर होगा और जिसने (इस) बातको पूरा किया जिस (के पूरा करने) पर उसने अल्लाहसे अ़हद किया था तो वोह अनक़रीब उसे बहुत बड़ा अज्र अ़ता फ़रमाएगा।

سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ
الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَاۤ اَمْوَالُنَا وَ
اَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ

11. अ़नक़रीब देहातियों में से वोह लोग जो (हुदैबिया में शिर्कत से) पीछे रेह गए थे आपसे (मा'जेरतन येह) कहेंगे के हमारे अमवाल और ऐहलो अयाल ने हमें मशगूल कर रखा था (इस लिए हम आपकी मइय्यत से मेहरूम रेह

بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ؕ بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۱۱﴾

गऐ) सो आप हमारे लिए बख़्शिश तलब करें। येह लोग अपनी ज़बानों से वोह (बातें) केहते हैं जो उनके दिलों में नहीं हैं। आप फ़रमा दें कि कौन है जो तुम्हें अल्लाह के (फ़ैसले के) खिलाफ़ बचाने का इख़्तियार रखता हो अगर उसने तुम्हारे नुकसान का इरादा फ़रमा लिया हो या तुम्हारे नफे' का इरादा फ़रमा लिया हो, बल्कि अल्लाह तुम्हारे कामों से अच्छी तरह बा ख़बर है।

بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ اِلٰۤى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّ زُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَ ظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۖۚ وَ كُنْتُمْ قَوْمًۢا بُوْرًا ﴿۱۲﴾

12. बल्कि तुमने येह गुमान किया था के रसूल (ﷺ) और ऐहले ईमान (या'नी सहाबा ﷺ) अब कभी भी पलट कर अपने घरवालों की तरफ नहीं आऐंगे और येह (गुमान) तुम्हारे दिलों में (तुम्हारे नफ़्स की तरफ़ से) खूब आरास्ता कर दिया गया था और तुमने बहुत ही बुरा गुमान किया और तुम हलाक होने वाली क़ौम बन गए।

وَ مَنْ لَّمْ يُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ فَاِنَّاۤ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ﴿۱۳﴾

13. और जो अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) पर ईमान न लाए तो हमने काफिरों के लिए दोज़ख़ तैयार कर रखी है।

وَ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۴﴾

14. और आस्मानों और ज़मीनकी बाहशाहत अल्लाह ही के लिए है, वोह जिसे चाहता है बख़्श देता है और जिसे चाहता है अ़ज़ाब देता है, और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला बेहद रह़म फ़रमाने वाला है।

سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ

15. जब तुम (ख़ैबर के) अमवाले ग़नीमत को हासिल करनेकी तरफ़ चलोगे तो (सफ़रे हुदैबिया में) पीछे रेह जाने वाले लोग कहेंगे हमें भी इजाज़त दो के हम तुम्हारे पीछे हो कर चलें। वोह चाहते हैं के अल्लाह के फ़रमानको बदल दें। फ़रमा दीजिऐ : तुम हरगिज़ हमारे पीछे नहीं आ सकते उसी तरह अल्लाहने पेहले से फ़रमा दिया था। सो

فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ؕ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۱۵﴾

अब वोह कहेंगे बल्कि तुम हमसे ह़सद करते हो, बात येह है कि येह लोग (ह़क़ बातको) बहुत ही कम समझते हैं।

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَ اِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۶﴾

16. आप देहातियों में से पीछे रेह जानेवालों से फ़रमा दें के तुम अ़नक़रीब एक सख़्त जंगजू कौम (से जिहाद) की तरफ बुलाए जाओगे तुम उनसे जंग करते रहोगे या वोह मुसलमान हो जाएंगे, सो अगर तुम हुक्म मान लोगे तो अल्लाह तुम्हें बेहतरीन अज्र अ़ता फ़रमाएगा। और अगर तुम रूगरदानी करोगे। जैसे तुमने पेहले रूगरदानी की थी तो वोह तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब में मुब्तिला कर देगा।

لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّ لَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّ لَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ؕ وَ مَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ وَ مَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۷﴾ ع ۲

17. (जिहाद से रेह जाने में) न अँधे पर कोई गुनाह है और न लंगड़े पर कोई गुनाह है और न (ही) बीमार पर कोई गुनाह है, और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की इताअ़त करेगा वोह उसे बहिश्तों में दाख़िल फ़रमा देगा जिनके नीचे नेहरें रवां होंगी, और जो शख़्स (इताअ़त से) मुंह फ़ेरेगा वोह उसे दर्दनाक अ़ज़ाब में मुब्तेला कर देगा।

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَ اَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿۱۸﴾

18. बेशक अल्लाह मोमिनों से राज़ी हो गया जब वोह (हुदैबिया में) दरख़्त के नीचे आपसे बैअ़त कर रहे थे, सो जो (जज़बए सिद्क़ो वफ़ा) उनके दिलों में था अल्लाहने मा'लूम कर लिया तो अल्लाहने उन (के दिलों) पर ख़ास तस्कीन नाजिल फ़रमाई और उन्हें एक बहुत ही क़रीब फ़त्हे (ख़ैबर) का इनाम अ़ता किया।

وَّ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۱۹﴾

19. और बहोत से अमवाले गनीमत (भी) जो वोह हासिल कर रहे हैं, और अल्लाह बड़ा गालिब बड़ी ह़िक्मतवाला है।

النصف

وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَ كَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَ لِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَ يَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿۲۰﴾

20. और अल्लाहने (कई फुतूह़ात के नतीजे में) तुमसे बहुतसी ग़नीमतों का वा'दा फ़रमाया है जो तुम आइन्दा ह़ासिल करोगे मगर उसने येह (ग़नीमते ख़ैबर) तुम्हें जल्दी अ़ता फ़रमा दी और (अहले मक्का, अहले ख़ैबर, क़बाइले बनी असदो ग़त्फान,अल गरज़ तमाम दुश्मन) लोगों के हाथ तुमसे रोक दिए, और ताकि येह मोमिनों के लिए (आइन्दा की काम्याबीओ फत्हयाबी की) निशानी बन जाऐ। और तुम्हें (इत्मेनान क़ल्ब के साथ) सीधे रास्ते पर (साबित कदम और) गामज़न रखे।

وَّ اُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿۲۱﴾

21. और दूसरी (मक्का, हवाज़न और हुनैन से ले कर फ़ारस और रूम तक की बड़ी फुतूहात) जिन पर तुम क़ादिर न थे बेशक अल्लाहने (तुम्हारे लिए) उनका भी अहाता फ़रमा लिया है, और अल्लाह हर चीज़ पर बड़ी कुदरत रखने वाला है।

وَ لَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّ لَا نَصِيْرًا ﴿۲۲﴾

22. और (ऐ मोमिनो !) अगर काफ़िर लोग (हुदैबिया में) तुम से जंग करते तो वोह ज़रूर पीठ फेर कर भाग जाते, फिर वोह न कोई दोस्त पाते और न मददगार (मगर अल्लाह को सिर्फ़ येह एक ही नहीं बल्कि कई फुतूहात का दरवाजा तुम्हारे लिए खोलना मक़सूद था)।

سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۚۖ وَ لَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿۲۳﴾

23. (येह) अल्लाह की सुन्नत है जो पहले से चली आ रही है, और आप अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तबदीली नहीं पाएंगे।

وَ هُوَ الَّذِيْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَ اَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ﴿۲۴﴾

24. और वोही है जिसने सरह़दे मक्का पर (हुदैबिया के क़रीब) उन (काफ़िरों) के हाथ तुम से और तुम्हारे हाथ उनसे रोक दिए उसके बाद के उसने तुम्हें उन (के गिरोह) पर ग़ल्बा बख़्श दिया था। और अल्लाह उन कामों को जो तुम करते हो ख़ूब देखने वाला है।

هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَ الْهَدْيَ مَعْكُوْفًا
اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ؕ وَ لَوْ لَا رِجَالٌ
مُّؤْمِنُوْنَ وَ نِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ
تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَـُٔوْهُمْ فَتُصِيْبَكُمْ
مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ لِيُدْخِلَ
اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ لَوْ
تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۲۵﴾

25. येही वोह लोग हैं जिन्होंने कुफ़्र किया और तुम्हें मस्जिदे ह़राम से रोक दिया और क़ुरबानी के जानवरों को भी, जो अपनी जगह पहुंचने से रुके पड़े रहे, और अगर कई ऐसे मोमिन मर्द और मोमिन औरतें (मक्का में मौजूद न होतीं) जिन्हें तुम जानते भी नहीं हो कि तुम उन्हें पामाल कर डालोगे और तुम्हें भी ला इल्मी में उनकी तरफ़से कोई सख़्ती और तकलीफ पहुंच जाएगी (तो हम तुम्हें इसी मौक़े' पर ही जंगकी इजाज़त दे देते। मगर फ़त्हे मक्का को मोअख़्ख़र इस लिए किया गया) ताके अल्लाह जिसे चाहे (सुल्ह के नतीजे में) अपनी रह़मत में दाख़िल फ़रमा ले। अगर (वहां के काफ़िर और मुसलमान) अलग अलग होकर एक दूसरे से मुमताज़ हो जाते तो हम उनमें से काफ़िरों को दर्दनाक अ़ज़ाब की सज़ा देते।

اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ
الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ
اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَ عَلَى
الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ
التَّقْوٰى وَ كَانُوْۤا اَحَقَّ بِهَا وَ اَهْلَهَا ؕ
وَ كَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿۲۶﴾ ع ۳ ۹ ۱۱

26. जब काफ़िर लोगोंने अपने दिलोंमें मुतकब्बिराना हटधर्मी रख ली (जो के) जाहिलियत की ज़िद और ग़ैरत (थी) तो अल्लाहने अपने रसूल (ﷺ) और मोमिनों पर अपनी ख़ास तस्कीन नाज़िल फ़रमाई और उन्हें कलिमए तक़्वा पर मुस्तह़कम फ़रमा दिया और वोह उसी के ज़ियादा मुस्तहिक थे और उसके अहल (भी) थे, और अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जाननेवाला है।

لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا
بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ
الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ
مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ ۙ
لَا تَخَافُوْنَ ؕ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا

27. बेशक अल्लाहने अपने रसूल (ﷺ) को हक़ीक़तके ऐन मुताबिक सच्चा ख़्वाब दिखाया था कि तुम लोग, अगर अल्लाहने चाहा तो ज़रूर बिज़ ज़रूर मस्जिदे हराम में दाख़िल होगे अमनो अमानके साथ, (कुछ) अपने सर मुंडवाए हुए और (कुछ) बाल कतरवाए हुए (इस हाल में के) तुम ख़ौफ़ज़दा नहीं होगे, पस वोह (सुल्ह हुदैबिया को इस ख़्वाबकी ताअबीर के पैशख़ेमा के तौर पर) जानता था

فَجَعَلَ مِنۡ دُوۡنِ ذٰلِكَ فَتۡحًا
قَرِيۡبًا ﴿۲۷﴾

هُوَ الَّذِىۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَهٗ بِالۡهُدٰى
وَدِيۡنِ الۡحَـقِّ لِيُظۡهِرَهٗ عَلَى الدِّيۡنِ
كُلِّهٖ‌ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيۡدًا ﴿۲۸﴾
مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰهِ‌ ؕ وَالَّذِيۡنَ
مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الۡكُفَّارِ رُحَمَآءُ
بَيۡنَهُمۡ‌ تَرٰٮهُمۡ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبۡتَغُوۡنَ
فَضۡلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضۡوَانًا‌ سِيۡمَاهُمۡ
فِىۡ وُجُوۡهِهِمۡ مِّنۡ اَثَرِ السُّجُوۡدِ‌ ؕ ذٰلِكَ
مَثَلُهُمۡ فِى التَّوۡرٰٮةِ ۛۚ وَمَثَلُهُمۡ فِى
الۡاِنۡجِيۡلِ ۛۚ كَزَرۡعٍ اَخۡرَجَ شَطْئَـهٗ
فَاٰزَرَهٗ فَاسۡتَغۡلَظَ فَاسۡتَوٰى عَلٰى
سُوۡقِهٖ يُعۡجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَـغِيۡظَ
بِهِمُ الۡكُفَّارَ‌ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ
اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنۡهُمۡ
مَّغۡفِرَةً وَّاَجۡرًا عَظِيۡمًا ﴿۲۹﴾

معانقة ١٥ ع ٤

जो तुम नहीं जानते थे सो उसने इस (फत्हे मक्का) से भी पेहले एक फोरी फत्ह (हुदैबिया से पलटते ही फ़त्हे ख़ैबर) अता कर दी। (और उसके अगले साल फ़त्हे मक्का और दाखिलाए हरम अता फ़रमा दिया)।

28. वोही है जिसने अपने रसूल (ﷺ) को हिदायत और दीने हक्क अता फ़रमा कर भेजा ताकि उसे तमाम अदयान पर ग़ालिब कर दे, और (रसूल (ﷺ) की सदाक़तो हक़्क़ानियत पर) अल्लाह ही गवाह काफ़ी है।

29. मुहम्मद (ﷺ) अल्लाहकेरसूल हैं, और जो लोग आप (ﷺ) की मइय्यत और संगत में हैं (वोह) काफ़िरों पर (बहोत सख़्त और ज़ोरावर हैं आपस में बहोत नरम दिल और शफीक हैं। आप उन्हें कसरत से रुकूअ करते हुऐ, सजूद करते हुऐ देखते हैं वोह (सिर्फ़) अल्लाह के फ़ज़ल और उसकी रज़ा के तलबगार हैं। उनकी निशानी उनके चेहरों पर सजदों का असर है (जो बसूरते नूर नुमायां हैं)। उनके येह अवसाफ़ तौरात में (भी मज़्कूर) हैं और उस के (येही) अवसाफ इन्जील में (भी मरकूम) हैं। वोह (सहाबा हमारे महबूबे मुकर्रम की) खेती की तरह हैं जिसने (सबसे पेहले) अपनी बारीक सी कूंपल निकाली, फिर उसे ताक़तवर और मज़्बूत किया, फिर वोह मोटी और दबीज़ हो गई, फिर अपने तने पर सीधी खड़ी हो गई (और जब सरसब्ज़ो शादाब हो कर लेहलहाई तो) काश्तकारों को क्या ही अच्छी लगने लगी (अल्लाहने अपने हबीब (ﷺ) के सहाबा رضی اللہ عنہم को उसी तरह ईमान के तनावर दरख़्त बनाया है) ताके उनके ज़रीए वोह (मुहम्मद (ﷺ) से जलने वाले) काफ़िरों के दिल जलाए, अल्लाहने उन लोगों से जो ईमान लाए और नेक आ'माल करते रहे मग़फ़िरत और अज्रे अजीम का वा'दा फ़रमाया है।

आयातुहा 18 | 49 सूरतुल हुजुराति म.दनिय्यतुन 106 | रुकूआ़तुहा 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है रुकूआ़तुहा ।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝۱

1. ऐ ईमानवालो ! (किसी भी मुआ़मले में) अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) से आगे न बढ़ा करो और अल्लाह से डरते रहो (कि कहीं रसूल ﷺ की बे अदबी न हो जाऐ), बेशक अल्लाह (सब कुछ) सुननेवाला खूब जाननेवाला है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَ لَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَ اَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝۲

2. ऐ ईमानवालो ! तुम अपनी आवाजों को नबिय्ये मुकर्रम ﷺ की आवाज़ से बुलंद मत किया करो और उनके साथ इस तरह बुलंद आवाज से बात (भी) न किया करो जैसे तुम एक दूसरे से बुलंद आवाज के साथ करते हो (ऐसा न हो) कि तुम्हारे सारे आ'माल ही (ईमान समेंत) ग़ारत हो जाएं और तुम्हें (ईमान और आ'माल के बरबाद हो जानेका) शऊ़र तक भी न हो।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝۳

3. बेशक जो लोग रसूल (ﷺ) की बारगाह में (अदबो नियाज़ के बाइ़स) अपनी आवाजों को पस्त रखते हैं, येही वोह लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने तक़्वा के लिए चुनकर ख़ालिस कर लिया है। उन्ही के लिए बख़्शिश है और अज्रे अ़ज़ीम है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝۴

4. बेशक जो लोग आपको हुजरों के बाहरसे पुकारते हैं उनमें से अकसर (आपके बुलंद मुक़ामो मर्तबा और आदाबे ता'ज़ीम की) समझ नहीं रखते।

وَ لَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ وَ اللّٰهُ

5. और अगर वोह लोग सब्र करते यहां तक कि आप खुदही उनकी तरफ़ बाहर तशरीफ़ ले आते तो येह उन के लिए बेहतर होता, अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٥

बहुत रह़म फ़रमाने वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ۝٦

6. ऐ ईमान वालो ! अगर तुम्हारे पास कोई फ़ासिक़ (शख़्स) कोई ख़बर लाए तो ख़ूब तेह़क़ीक़ कर लिया करो (ऐसा न हो) के तुम किसी क़ौम को लाइल्मी में (नाह़क़) तकलीफ़ पहुंचा बैठो, फ़िर तुम अपने किए पर पछताते रेह जाओ।

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ؕ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۝٧

7.और जान लो कि तुम में रसूलल्लाह ﷺ मौजूद हैं, अगर वोह बहुत से कामों में तुम्हारा केहना मान लें तो तुम बड़ी मुश्किल में पड़ जाओगे लेकिन अल्लाहने तुम्हें ईमान की मुहब्बत अता फ़रमाई और उसे तुम्हारे दिलों में आरास्ता फ़रमा दिया और कुफ्र और नाफ़रमानी और गुनाह से तुम्हें मु-त-नफ़्फ़िर कर दिया, ऐसे ही लोग दीन की राह पर साबित और गामज़न हैं।

فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٨

8. (येह) अल्लाह के फ़ज़्ल और (उसकी) ने'मत (या'नी तुम में रसूले उम्मी ﷺ की बे'सत और मौजूदगी) के बाइस है, और अल्लाह ख़ूब जाननेवाला और बड़ी ह़िक्मतवाला है।

وَاِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا عَلَى الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْٓءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ فَآءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝٩

9. और अगर मुसलमानों के दो गिरोह आपसमें जंग करें तो उनके दरमियान सुलेह करा दिया करो, फिर अगर उनमें से एक (गिरोह) दूसरे पर ज़ियादती और सरकशी करे तो उस (गिरोह) से लड़ो जो ज़ियादती का मुर्तकिब हो रहा है यहां तक कि वोह अल्लाह के हुक्म की तरफ लौट आऐ, फिर अगर वोह रजूअ़ कर ले तो दोनों के दरम्यान अ़दल के साथ सुलह करा दो और इन्साफ़ से काम लो, बेशक अल्लाह इन्साफ़ करनेवालों को बहुत पसंद फ़रमाता है।

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا
بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُوْنَ ﴿١٠﴾ ع

10. बात येही है कि (सब) अहले ईमान (आपस में) भाई हैं। सो तुम अपने दो भाइयों के दरम्यान सुलेह कराया करो, और अल्लाह से डरते रहो ताके तुम पर रहम किया जाए।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ
مِّنْ قَوْمٍ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا
مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰۤى
اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْۤا
اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ
بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ
الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿١١﴾

11. ऐ ईमान वालो ! कोई क़ौम किसी क़ौम का मज़ाक़ न उड़ाए मुमकिन है वोह लोग उन (तमस्खुर करनेवालों) से बेहतर हों और न औ़रतें ही दूसरी औ़रतों का (मज़ाक़ उड़ाएं) मुमकिन है वोही औरतें उन (मज़ाक़ उड़ाने वाली औरतों) से बेहतर हों, और न आपसमें ता'नाजनी और इल्ज़ाम तराशी किया करो और न एक दूसरे के बुरे नाम रखा करो, किसी के ईमान (लाने) के बाद उसे फ़ासिक़ो बदकार केहना बहोत ही बुरा नाम है, और जिसने तौबा नहीं की सो वही लोग ज़ालिम हैं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا
مِّنَ الظَّنِّ ؗ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّ
لَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ
بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ
لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ
رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾

12. ऐ ईमान वालो ! ज्यादातर गुमानो से बचा करो बेशक बाज गुमान (ऐसे) गुनाह होते हैं (जिन पर उख़रवी सज़ा वाजिब होती है) और (किसी के ग़ैबों और राज़ों की) जुस्तजू न किया करो और न पीठ पीछे एक दूसरे की बुराई किया करो, क्या तुम में से कोई शख़्स पसंद करेगा कि वोह अपने मुर्दा भाईका गोश्त खाए, सो तुम उससे नफ़रत करते हो। और (इन तमाम मुआ़मलात में) अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह तौबा को बहुत कुबूल फ़रमाने वाला बहुत रहम फ़रमाने वाला है।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ
ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّ
قَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ

13. ऐ लोगो ! हमने तुम्हें मर्द और औ़रत से पैदा फ़रमाया और हमने तुम्हें (बड़ी बड़ी) क़ौमों और क़बीलों में (तक़्सीम) किया ताकि तुम एक दूसरे को पेहचान सको।

عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿١٣﴾

बेशक अल्लाहके नजदीक तुम में जियादा बाइज्जत वोह है जो तुम में ज्यादा परहेजगार हो, बेशक अल्लाह खूब जानने वाला खूब ख़बर रखने वाला है।

قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَ اِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤﴾

14. देहाती लोग केहते हैं के हम ईमान लाए हैं, आप फ़रमा दीजिए, तुम ईमान नहीं लाए, हां येह कहो कि हम इस्लाम लाए हैं और अभी ईमान तुम्हारे दिलों में दाख़िल ही नहीं हुआ, और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की इताअ़त करो तो वोह तुम्हारे आ'माल (के सवाब में) से कुछ भी कम नहीं करेगा, बेशक अल्लाह बहुत बख़्शाने वाला बहुत रहम फ़रमाने वाला है।

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿١٥﴾

15. ईमानवाले तो सिर्फ वोह लोग हैं जो अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) पर ईमान लाए, फिर शक में न पड़े और अल्लाह की राह में अपने अमवाल और अपनी जानों से जिहाद करते रहे, येही वोह लोग हैं जो (दावए ईमान में) सच्चे हैं।

قُلْ اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٦﴾

16. फ़रमा दीजिऐ, क्या तुम अल्लाहको अपनी दीनदारी जतला रहे हो, हालांकि अल्लाह उन (तमाम) चीज़ों को जानता है जो आस्मानों में हैं और जो ज़मीन में हैं, और अल्लाह हर चीज़ का खूब इल्म रखने वाला है।

يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا ؕ قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ ۚ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٧﴾

17. येह लोग आप पर एहसान जतलाते है कि वोह इस्लाम ले आए हैं। फ़रमा दीजिए : तुम अपने इस्लाम का मुझ पर एहसान न जतलाओ बल्कि अल्लाह तुम पर एहसान फ़रमाता है कि उसने तुम्हें ईमान का रास्ता दिखाया है, बशर्ते कि तुम (ईमान में) सच्चे हो।

اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ

18. बेशक अल्लाह आस्मानों और जमीन के सब ग़ैब

وَالْاَرْضَ ط وَ اللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾ ع ٢ ٨ ١٢

जानता है, और अल्लाह जो अ़मल भी करते हो उसे ख़ूब देखने वाला है।

आयातुहा 45 | 50 सूरतु क़ॉफ़ मक्किय्यतुन 34 | रुकूआ़तुहा 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

قٓ ج وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ﴿١﴾

1. क़ॉफ़ (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं), क़सम है कुर्आने मजीद की।

بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ﴿٢﴾ ج

2. बल्कि उन लोगों ने तअ़ज्जुब किया के उनके पास उन्ही में से एक डर सुनाने वाला आ गया है सो काफ़िर केहते हैं येह अ़जीब बात है।

ءَاِذَا مِتْنَا وَ كُنَّا تُرَابًا ج ذٰلِكَ رَجْعٌۢ بَعِيْدٌ ﴿٣﴾

3. क्या जब हम मर जाएंगे और हम मिट्टी हो जाऐंगे (तो फिर ज़िन्दा होंगे) ? येह पलटना (फ़हमो इदराक से) बईद है।

قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ج وَعِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ﴿٤﴾

4. बेशक हम जानते हैं के ज़मीन उन (के जिस्मों) से (खा खा कर) कितना कम करती है, और हमारे पास (ऐसी) किताब है जिस में सब कुछ महफ़ूज़ है।

بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِيْٓ اَمْرٍ مَّرِيْجٍ ﴿٥﴾

5. बल्कि (अ़जीब और फ़ह्मो इद्राक से बईद बात तो येह है कि) उन्होंने ह़क़ (या'नी रसूल ﷺ और कुरआन) को झुटला दिया जब वोह उनकेपास आ चुका सो वोह ख़ुद (ही) उलझन और इज़्तिराब की बात में (पड़े) हैं।

اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوْجٍ ﴿٦﴾

6. सो क्या उन्होंने आस्मानकी तरफ़ निगाह नहीं की जो उनके ऊपर है कि हमने उसे कैसे बनाया है और (कैसे) सजाया है और उसमें कोई शिगाफ़ (तक) नहीं है।

وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا

7. और (इसी तरह) हमने ज़मीन को फ़ैलाया और उसमें

رَوَاسِيَ وَ اَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۭ بَهِيْجٍ ۙ﴿۷﴾

हमने बहुत भारी पहाड़ रखे और हमने उसमें हर क़िस्म के खुशनुमा पौदे उगाए।

تَبْصِرَةً وَّ ذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ﴿۸﴾

8. (येह सब) बसीरत और नसीह़त (का सामान) है हर उस बन्दे के लिए जो (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ़ करनेवाला है।

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّ حَبَّ الْحَصِيْدِ ۙ﴿۹﴾

9. और हमने आस्मानसे बा बरकत पानी बरसाया फिर हमने उससे बाग़ात उगाए और खेतों का ग़ल्ला (भी)।

وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ۙ﴿۱۰﴾

10. और लम्बी लम्बी खजूरें जिनके खूशे तेह ब तेह होते हैं।

رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۙ وَ اَحْيَيْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ؕ كَذٰلِكَ الْخُرُوْجُ ﴿۱۱﴾

11.(येह सब कुछ अपने) बन्दों की रोज़ी के लिए (किया) और हमने उस (पानी) से मुर्दा जमीन को जिन्दा किया। उसी तरह (तुम्हारा) कबरों से निकलना होगा।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّ اَصْحٰبُ الرَّسِّ وَ ثَمُوْدُ ۙ﴿۱۲﴾

12. इन (कुफ़्फ़ारे मक्का) से पेहले क़ौमे नूह ने, और (सर ज़मीने यमामा के अँधे) कुंवें वालों ने, और (मदीना से शाम की तरफ़ तबूक के क़रीब बस्तीऐ हिज्र में आबाद सालेह علیہ السلام की कौम) समूद ने।

وَعَادٌ وَّ فِرْعَوْنُ وَ اِخْوَانُ لُوْطٍ ۙ﴿۱۳﴾

13. और (उ़मान और अर्ज़े महरा के दरमियान यमन की वादिऐ अह़क़ाफ़ में आबाद हूद علیہ السلام की क़ौम) आ़दने और (मिस्र के हुकमरान) फिरऔ़न ने और (अर्ज़े फ़लस्तीन में सदूम और अ़मूरा की रेहनेवाली) क़ौमे लूतने।

وَّ اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ وَ قَوْمُ تُبَّعٍ ؕ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ ﴿۱۴﴾

14. और (मदयन के घने दरख़्तों वाले बन) ऐका के रेहने वालों ने (येह कौमे शुऐ़ब थी) और (बादशाहे यमन असद अबू करीब) तुब्बा (अल हिम्यरी) की क़ौम ने, (अल गरज़ इन) सबने रसूलों को झुटलाया, पस (इन पर) मेरा वा'दए अ़ज़ाब साबित हो कर रहा।

اَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ ؕ بَلْ هُمْ

15. सो क्या हम पेहली बार पैदा करने के बाइस थक गए

فِيْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٥﴾ ع

हैं ? (ऐसा नहीं) बल्कि वोह लोग अज़ सरेनौ पैदाइश की निस्बत शक में (पड़े) हैं।

وَ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ ۚ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ﴿١٦﴾

16. और बेशक हमने इन्सानको पैदा किया है और हम उन वस्वसों को (भी) जानते हैं जो उसका नफ्स (उसके दिलो दिमाग़ में) डालता है। और हम उसकी शेह रग से भी जियादा उसके करीब हैं।

اِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِيْنِ وَ عَنِ الشِّمَالِ قَعِيْدٌ ﴿١٧﴾

17. जब दो लेने वाले (फ़रिश्ते उसके हर क़ौलो फ़े'ल को तेहरीर में) ले लेते हैं (जो) दाएं तरफ़ और बाएं तरफ़ बैठे हुए हैं।

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ﴿١٨﴾

18. वोह मुंह से कोई बात नहीं केहने पाता मगर उसके पास एक निगहबान (लिखने के लिए) तैयार रेहता है।

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ﴿١٩﴾

19. और मौतकी बेहोशी हक्क के साथ आ पहुंची। (ऐ इन्सान!) येही वोह चीज़ है जिस से तू भागता था।

وَ نُفِخَ فِي الصُّوْرِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ ﴿٢٠﴾

20. और सूर फूंका जाएगा, येही (अ़ज़ाब ही) वईद का दिन है।

وَجَآءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَآئِقٌ وَّ شَهِيْدٌ ﴿٢١﴾

21. और हर जान (हमारे हुज़ूर इस तरह) आएगी के उसका एक हांकने वाला (फ़रिश्ता) और (दूसरा आ'माल पर) गवाह होगा।

لَقَدْ كُنْتَ فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ﴿٢٢﴾

22. हक़ीक़त में तू उस (दिन) से गफलत में पड़ा रहा सो हमने तेरा पर्दए (गफ़लत) हटा दिया पस आज तेरी निगाह तेज़ है।

وَ قَالَ قَرِيْنُهٗ هٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيْدٌ ﴿٢٣﴾

23. और उसके साथ रेहने वाला (फ़रिश्ता) कहेगा : येह है जो कुछ मेरे पास तैयार है।

اَلْقِيَا فِيْ جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿٢٤﴾

24. (हुक्म होगा) : पस तुम दोनों (ऐसे) हर ना शुक्र गुज़ार सरकश को दोज़ख़में डाल दो।

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيْبِ ﴿٢٥﴾

25. जो नेकी से रोकनेवाला है, हदसे बढ़ जानेवाला है, शक करने और डालनेवाला है।

الَّذِيْ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلْقِيٰهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيْدِ ﴿٢٦﴾

26. जिसने अल्लाहके साथ दूसरा मा'बूद ठेहरा रखा था सो तुम उसे सख़्त अज़ाब में डाल दो।

قَالَ قَرِيْنُهٗ رَبَّنَا مَآ اَطْغَيْتُهٗ وَلٰكِنْ كَانَ فِيْ ضَلٰلٍ بَعِيْدٍ ﴿٢٧﴾

27. (अब) उसका (दूसरा) साथी (शैतान) कहेगा : ऐ हमारे रब ! इसे मैं ने गुमराह नहीं किया बल्कि येह (खुद ही) परले दर्जे की गुमराही में मुब्तिला था।

قَالَ لَا تَخْتَصِمُوْا لَدَيَّ وَ قَدْ قَدَّمْتُ اِلَيْكُمْ بِالْوَعِيْدِ ﴿٢٨﴾

28. इर्शाद होगा : तुम लोग मेरे हुज़ूर झगड़ा मत करो हालांकि मैं तुम्हारी तरफ़ पेहले ही (अ़ज़ाब की) वईद भेज चुका हूं।

مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَآ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٢٩﴾ ع ٢ ١٤ ١٦

29. मेरी बारगाह में फ़रमान बदला नहीं जाता और न ही में बंदों पर जुल्म करने वाला हुं।

يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَاْتِ وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ ﴿٣٠﴾

30. उस दिन हम दोज़ख़से फ़रमाएंगे : क्या तुम भर गई है ? और वोह कहेगी : क्या कुछ और ज़ियादा भी है ?

وَ اُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ ﴿٣١﴾

31. और जन्नत परहेज़गारों के लिए क़रीब कर दी जाएगी, बिल्कुल दूर नहीं होगी।

هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِكُلِّ اَوَّابٍ حَفِيْظٍ ﴿٣٢﴾ ج

32. (और उनसे इर्शाद होगा) : येह है वोह जिसका तुमसे वा'दा किया गया था (के) हर तौबा करने वाले (अपने दीन और ईमान की) हिफ़ाज़त करनेवाले के लिए (है)।

مَنْ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَآءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبِ ﴿٣٣﴾

33. जो (खुदाए) रहमान से बिन देखे डरता रहा और (अल्लाह की बारगाह में) रुजूओ इनाबतवाला दिल ले कर हाज़िर हुवा।

ادْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ ﴿٣٤﴾

34. इसमें सलामती के साथ दाख़िल हो जाओ, येह हमेशगी का दिन है।

لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَ لَدَيْنَا مَزِيْدٌ ﴿٣٥﴾

35. इस (जन्नत) में उन के लिए वोह तमाम ने'मतें (मौजूद) होंगी जिनकी वोह ख़्वाहिश करेंगे और हमारे हुज़ूर में एक ने'मत मज़ीद भी है (या और भी बहुत कुछ है, सो आशिक़ मस्त हो जाएंगे)।

وَ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِي الْبِلَادِ ؕ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿٣٦﴾

36. और हमने उन (कुफ़्फ़ारे मुशरिकीने मक्का) से पेहले कितनी ही उम्मतों को हलाक कर दिया जो ताक़तो क़ुव्वत में उनसे कहीं बढ़ कर थीं, चुनान्चे उन्होंने (दुनिया के) शेहरों को छान मारा था कि कहीं (मौत या अज़ाब से) भाग जाने की कोई जगह हो।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ وَ هُوَ شَهِيْدٌ ﴿٣٧﴾

37. बेशक इस में यक़ीनन इन्तिबाह और तज़क्कुर है उस शख़्स के लिए जो साहिबे दिल है (या'नी ग़फ़लत से दूरी और क़ल्बी बेदारी रखता है) या कान लगा कर सुनता है (या'नी तवज्जोह को यकसू और गैर से मुन्क़ता' रख़ता है) और वोह (बातिनी) मुशाहिदे में है (या'नी हुस्नो जमाले उलूहिय्यत की तजल्लियात में गुम रेहता है)।

وَ لَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَ مَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ۖ وَّ مَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ ﴿٣٨﴾

38. और बेशक हमने आस्मानों और ज़मीन को और उस (काइनात) को जो दोनों के दरमियान है छ ज़मानों में तख़्लीक़ किया है, और हमें कोई तकान नहीं पहुंची।

فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَ سَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَ قَبْلَ الْغُرُوْبِ ﴿٣٩﴾ ۚ

39. सो आप उन बातों पर जो वोह केहते हैं सब्र कीजिए और अपने रबकी हम्द के साथ तस्बीह कीजिऐ तुलूए आफ़्ताब से पेहले और गुरूबे आफ़ताब से पेहले।

وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَ اَدْبَارَ

40. और रात के बो'ज़ अवक़ात में भी उसकी तस्बीह

السُّجُوْدِ ﴿٤٠﴾

कीजिऐ और नमाजों के बाद भी।

وَ اسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿٤١﴾

41. और (उस दिनका हाल) ख़ूब सुन लीजिए जिस दिन एक पुकारने वाला क़रीबी जगह से पुकारेगा।

يَّوْمَ يَسْمَعُوْنَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ ﴿٤٢﴾

42. जिस दिन लोग सख़्त चिन्घाड की आवाज को बिल यक़ीन सुनेंगे, येही क़ब्रों से निकलने का दिन होगा।

اِنَّا نَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَ اِلَيْنَا الْمَصِيْرُ ﴿٤٣﴾

43. बेशक हम ही ज़िन्दा रखते हैं और हम ही मौत देते हैं और हमारी ही तरफ़ पलट कर आना है।

يَوْمَ تَشَقَّقُ الْاَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ؕ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ ﴿٤٤﴾

44. जिस दिन ज़मीन उन पर से फट जाएगी तो वोह जल्दी जल्दी निकल पड़ेंगे, येह हश्र (फिर से लोगों को जमो' करना) हम पर निहायत आसान है।

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَ مَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۫ فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ﴿٤٥﴾ ع ٣ ١٦ ١٧

45. हम ख़ूब जानते हैं जो कुछ वोह केहते हैं और आप उन पर जब्र करने वाले नहीं हैं, पस कुरआन के जरीऐ उस शख़्स को नसीहत फ़रमाइए जो मेरे वादाऐ अ़ज़ाब से डरता है।

आयातुहा 60 | 51 सूरतुज़ ज़ारियाति मक्किय्यतुन 67 | रुकूआ़तुहा 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ﴿١﴾

1. उड़ा कर बिखेर देनेवाली हवाओंकी क़सम।

فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ﴿٢﴾

2.और (पानी का) बारे गिरां उठाने वाली बदलियों की क़सम।

فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ﴿٣﴾

3. और ख़रामां ख़रामां चलने वाली कश्तियों की क़सम।

فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ﴿٤﴾

4. और काम तक़्सीम करने वाले फ़रिश्तों की क़सम।

اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ﴿٥﴾

5. बेशक (आख़िरत का) जो वा'दा तुम से किया जा रहा है बिल्कुल सच्चा है।

وَّ اِنَّ الدِّیْنَ لَوَاقِعٌ ﴿۶﴾

6. और बेशक (आ'माल की) जज़ाओ सज़ा ज़रूर वाके' हो कर रहेगी।

وَ السَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ﴿۷﴾

7. और (सितारों और सय्यारों की) कह्कशाओं और गुज़रगाहों वाले आस्मानकी क़सम।

اِنَّكُمْ لَفِیْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ﴿۸﴾

8. बेशक तुम मुख़्तलिफ़ बेजोड़ बातों में (पड़े) हो।

یُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ ﴿۹﴾

9. इस (रसूल ﷺ और कुरआन से) वोही फिरता है जिसे (इल्मे अज़ली से) फैर दिया गया।

قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ﴿۱۰﴾

10. ज़न्नो तख़्मीन से झूट बोलनेवाले हलाक हो गए।

الَّذِیْنَ هُمْ فِیْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ﴿۱۱﴾

11. जो जहालतो ग़फ़लत में (आख़िरत को) भूल जानेवाले हैं।

یَسْـَٔلُوْنَ اَیَّانَ یَوْمُ الدِّیْنِ ﴿۱۲﴾

12. पूछते हैं यौमे जज़ा कब होगा ?

یَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ یُفْتَنُوْنَ ﴿۱۳﴾

13. (फ़रमा दीजिऐ :) उस दिन (होगा जब) वोह आतिशे दोज़ख़में तपाए जाएंगे।

ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ ؕ هٰذَا الَّذِیْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿۱۴﴾

14. (उनसे कहा जाएगा) अपनी सज़ा का मज़ा चखो, येही वोह अ़ज़ाब है जिसे तुम जल्दी मांगते हो।

اِنَّ الْمُتَّقِیْنَ فِیْ جَنّٰتٍ وَّ عُیُوْنٍ ﴿۱۵﴾

15. बेशक परहेज़गार बाग़ों और चश्मों में (लुत्फ़ो अंदोज़ होते) होंगे।

اٰخِذِیْنَ مَاۤ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِیْنَ ﴿۱۶﴾

16. उन ने'मतों को (कैफ़ो सुरूर) से लेते होंगे जो उनका रब उन्हें (लुत्फ़ो करम से) देता होगा। बेशक येह वोह लोग हैं जो उससे क़ब्ल (की ज़िन्दगी में) साहिबाने एह़सान थे।

كَانُوْا قَلِیْلًا مِّنَ الَّیْلِ مَا یَهْجَعُوْنَ ﴿۱۷﴾

17. वोह रातों को थोडी सी दैर सोया करते थे।

وَ بِالْاَسْحَارِ هُمْ یَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿۱۸﴾

18. और रातके पिछले पेहरों में (उठ उठ कर) मग़फिरत तलब करते थे।

وَفِيٓ أَمْوَٰلِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ
وَٱلْمَحْرُومِ ﴿١٩﴾

19. और उनके अमवाल में साइल और महरूम (सब हाजतमंदों) का हक़ मुक़र्रर था।

وَفِي ٱلْأَرْضِ ءَايَٰتٌ لِّلْمُوقِنِينَ ﴿٢٠﴾

20. और ज़मीनमें साहिबाने ईक़ान (या'नी कामिल यक़ीनवालों) के लिए बहुत सी निशानियां हैं।

وَفِيٓ أَنفُسِكُمْ ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٢١﴾

21. और खुद तुम्हारे नुफ़ूस में (भी हैं), सो क्या तुम देखते नहीं हो।

وَفِي ٱلسَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا
تُوعَدُونَ ﴿٢٢﴾

22.और आस्मानमें तुम्हारा रिज़्क़ (भी) है और वोह (सब कुछ भी) जिसका तुमसे वा'दा किया जाता है।

فَوَرَبِّ ٱلسَّمَآءِ وَٱلْأَرْضِ إِنَّهُۥ
لَحَقٌّ مِّثْلَ مَآ أَنَّكُمْ تَنطِقُونَ ﴿٢٣﴾ ع

23. पस आस्मान और ज़मीन के मालिक की क़सम येह (हमारा वा'दा) इसी तरह यक़ीनी है जिस तरह तुम्हारा अपना बोलना (तुम्हें उस पर कामिल यक़ीन होता है कि मुंह से क्या केह रहे हो)।

ع ٢٣ ١٨

هَلْ أَتَىٰكَ حَدِيثُ ضَيْفِ إِبْرَٰهِيمَ
ٱلْمُكْرَمِينَ ﴿٢٤﴾

24. क्या आप के पास इब्राहीम (عليه السلام) के मोअ़ज़्ज़ज़ मेहमानों की ख़बर पहोंची है।

وقف لازم

إِذْ دَخَلُوا۟ عَلَيْهِ فَقَالُوا۟ سَلَٰمًا ۖ
قَالَ سَلَٰمٌ قَوْمٌ مُّنكَرُونَ ﴿٢٥﴾

25. जब वोह (फ़रिश्ते) उनके पास आए तो उन्होंने सलाम पेश किया, इब्राहीम (عليه السلام) ने भी (जवाबन) सलाम कहा, (साथ ही दिल में सोचने लगे के) येह अजनबी लोग हैं।

فَرَاغَ إِلَىٰٓ أَهْلِهِۦ فَجَآءَ بِعِجْلٍ
سَمِينٍ ﴿٢٦﴾

26. फिर जल्दी से अपने घरकी तरफ गऐ और एक फ़र्बा बछड़े की सज्जी ले आए।

فَقَرَّبَهُۥٓ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿٢٧﴾

27. फिर उसे उनके सामने पेश कर दिया, फ़रमाने लगे : क्या तुम नहीं खाओगे ?

فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۖ قَالُوا۟ لَا
تَخَفْ ۖ وَبَشَّرُوهُ بِغُلَٰمٍ عَلِيمٍ ﴿٢٨﴾

28. फिर उन (के न खाने) से दिल में हल्की से घबराहट मेहसूस की। वोह (फ़रिश्ते) केहने लगे : आप घबराइए नहीं और उनको इल्मो दानिशवाले बेटे (इस्हाक़ عليه السلام) की खूशखबरी सुना दी।

فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِیْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ عَقِیْمٌ ﴿۲۹﴾

29. फिर उनकी बीवी (सारह) हैरतो हसरत की आवाज़ निकालते हुए मुतवज्जेह हुई और तअ़ज्जुब से अपने माथे पर हाथ मारा और केहने लगी : (क्या) बुढ़िया बांझ औ़रत (बच्चा जनेगी?)।

قَالُوْا كَذٰلِكِ ۙ قَالَ رَبُّكِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِیْمُ الْعَلِیْمُ ﴿۳۰﴾

30. (फ़रिश्तों ने) कहा : ऐसे ही होगा, तुम्हारे रबने फ़रमाया है । बेशक वोह बड़ी हिक्मतवाला बहुत इ़ल्मवाला है।